कोरोना संकट और संत साहित्य की प्रासंगिकता

संपादक : डॉ. बारेलाल जैन
सह-संपादक : डॉ. मोहित वर्मा

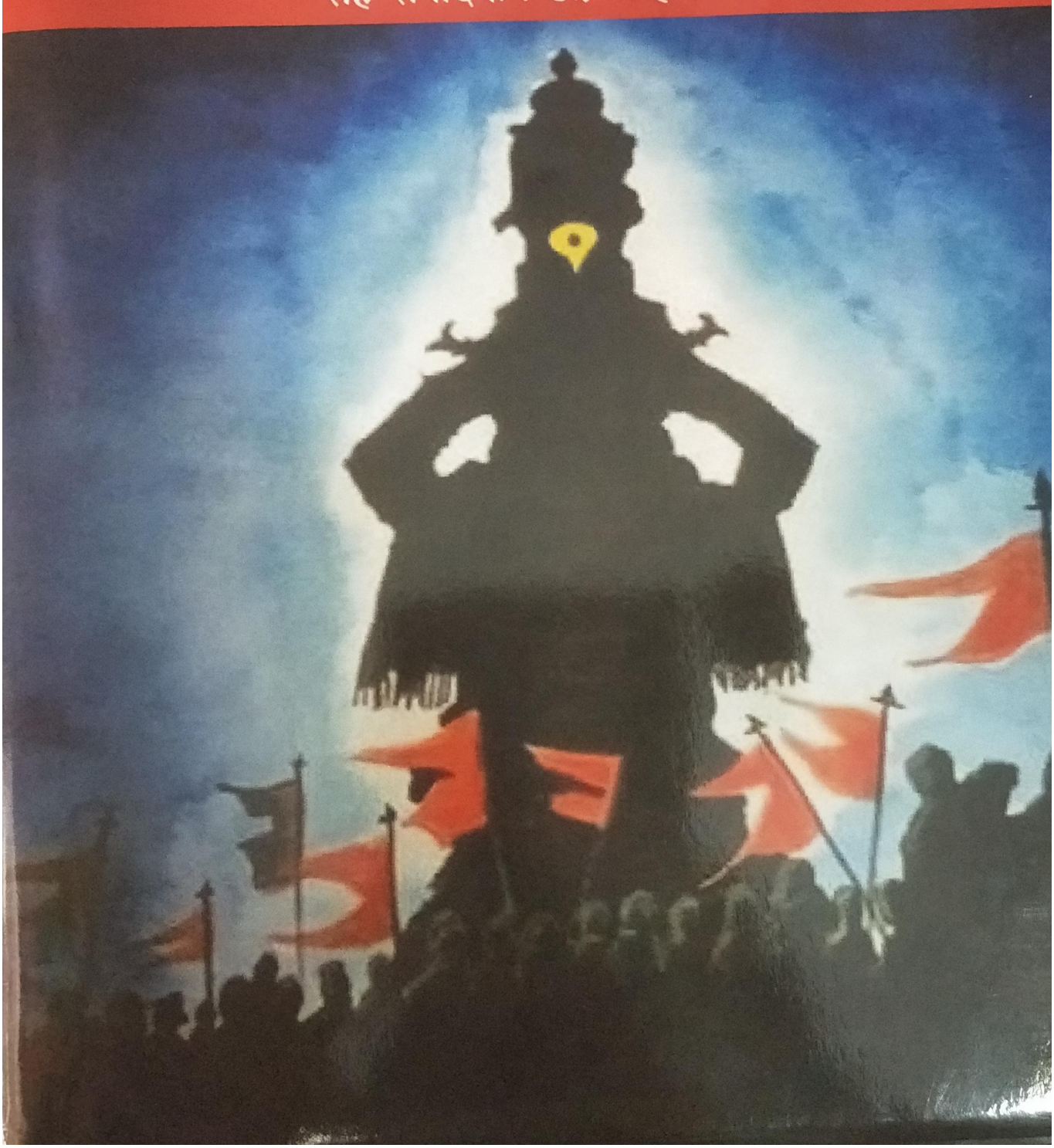

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक, संपादक, लेखक की लिखित अनुमति को बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-81-949150-8-9

प्रथम संस्करण मार्च, 2021

© संपादकाधीन

पुस्तक : कोरोना संकट और संत साहित्य की प्रासंगिकता

संपादक : डॉ. बारेलाल जैन

सह-संपादक : डॉ. मोहित वर्मा

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्त
कानपुर (उ.प्र.) - 208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

वितरक : **समता प्रकाशन, कानपुर (उ०प्र०)**

मूल्य : ₹ 795/-

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

जिल्द-सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर-01

5.

कोरोना संकट : संत कबीर साहित्य की प्रासंगिकता

डॉ. (श्रीमती) धनेश्वरी दुबे

प्रस्तावना

वर्तमान में कोरोना संकट ने हमारी सोच एवं आत्मविश्वास को कुंद कर दिया है, ऐसे लोगों को हम देखते हैं जिनका चेहरा बुझा–बुझा है। उनमें न कुछ जोश है न होश। अपने ही विचारों में खोए–खोए ,निष्क्रिय और खाली–खाली से, निराश और नकारात्मक तथा ऊर्जा विहीन। इस समय लोग पूरी नींद लेने के बावजूद सुबह उठने पर खुद को थका महसूस करते है, कार्य के प्रति उनमें उत्साह नहीं होता। उनका ऊर्जा का स्तर गिरता जा रहा है। लोग चिंता या तनावग्रस्त ज्यादा दिखाई दे रहे हैं। यह सब हमारी शारीरिक स्वस्थता के साथ–साथ मानसिक स्थिति का और विचारों का एक प्रतिबिंब है।

आज के कोरोना संकट के समय में यह बहुत गंभीर समस्या है कि निराशा और अवसाद में डूबे लोग सकारात्मकता और ऊर्जा की तलाश में है। ऐसे में बड़े पैमाने पर सकारात्मकता पढ़ाने वालों की जरूरत है। सकारात्मकता का अर्थ है– अपने जीवन जीने की दिशाओं को आशा भरी नजरों से देखना। कोरोना के इस घोर अंधेरों के बीच भी एक और हम भारत को विरासत में प्राप्त आध्यात्मिक मूल्यों एवं जीवन शैली को अपना कर पुनः स्वस्थ, उन्नत एवं खुशहाल जीवन की ओर अग्रसर हो सकते हैं, तो दूसरी ओर इस संकट के दौर में संत साहित्य भी हमें संत साहित्य भी हमें राह दिखा सकते हैं। संत साहित्य भी हमें राह दिखा सकते हैं संत साहित्य भी हमें राह दिखा सकते संत साहित्य भी हमें राह दिखा सकते हैं।

संत साहित्य की विशेषताआएँ

संत साहित्य की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नानुसार है–

1. संत साहित्य लोक का साहित्य है। संतो ने अपने उपदेशों और रचनाओं के माध्यम से लोग संवेदनाओं को जागृत कराने के लिए अथक प्रयास किया है।